उपेक्षित धर्मस्थल-मरते श्रद्धालु

जनपद बिलासपुर)हिमांचल प्रदेश(के सुप्रसिद्ध शक्तिपीठ नयना देवी का मन्दिर रविवार, को एक भीषण दुर्घटना तथा साजिश का शिकार 08 अगस्त 03 से अ 150 हुआ।धिक श्रद्धालु हमेशा की नींद सो गये तो से उपर श्र 500द्धालु जख्मी हुए। इस प्रकार की दुर्घटना किसी हिन्दू धर्मस्थल में पहली बार नहीं हुई है। कमोबेश इस प्रकार की दुर्घटनाएँ हर उस हिन्दू धर्मस्थल में निरन्तर घटित हो रही हैं जो सरकार के नियंत्रण में हैं। भारत जैसे धर्म प्रधान देश में आजादी के साठ वर्षों के बाद भी हम अपने धर्मस्थलों को सुरक्षित नहीं कर पाये हैं। वहाँ आने वाले लाखों श्रद्धालुओं के लिए हम उन्हें सुविधायुक्त भी नहीं बना पाये हैं। जबकि एक अनुमान के अनुसार प्रतिवर्ष पूरे देश के अन्दर हिन्दू मन्दिरों से विभिन्न राज्य सरकारों को लगभग दस हजार करोड़ रुपये की शुद्ध आय होती है। बावजूद इसके हिन्दू धर्म स्थल उपेक्षित हैं, सरकारी अव्यवस्था के शिकार हैं। हिन्दू धर्मस्थलों से होने वाली आय हिन्दू धर्मस्थलों की सुरक्षा अथवा श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए नहीं अपितु हज सब्सिडी तथा हज हाउस बनाने में खर्च की जाती है, अल्पसंख्यक तुष्टीकरण पर खर्च होती है, मदरसों की सुविधाएँ बढ़ाने पर खर्च होती है और फिर उन्हीं मदरसों से निकले 'तालिबान' हिन्दू धर्म स्थलों पर हमले करते हैं अथवा उस साजिश में शामिल होते हैं जो इस प्रकार के हादसों के लिए जिम्मेदार हैं। श्री रघुनाथ मन्दिर, जम्मू पर दो बार, अक्षरधाम मन्दिर अहमदाबाद, श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या, संकट मोचन मन्दिर वाराणसी आदि ढेर सारे ऐसे षड्यंत्रों के उदाहरण हैं जो इस्लामी कट्टरपंथियों के इशारों पर इस्लामी आतंकी संगठनों ने अन्जाम दिये हैं। नयना देवी मन्दिर की त्रासदी जहाँ सरकारी अव्यवस्था एवं उपेक्षा को प्रदर्शित करती है वहीं पुलिस की बर्बरता एवं हिंसक चेहरे को भी प्रदर्शित करती है। इस दुर्घटना के पीछे आतंकी साजिश से भी इन्कार नहीं किया जा सकता है। क्योंकि भारत की सम्प्रभुता पर बारबार कुठाराघात करने के -

असफल प्रयास से हताश और निराश आतंकी संगठन हिन्दू समाज, संस्कृति एवं धर्म के अनुयायियों का अधिकाधिक नुकसान करने के लिए हर समय किसी न किसी साजिश को अन्जाम देने में तत्पर रहते हैं। इन सब का दुःखद पक्ष यह भी है कि इस प्रकार की दुर्घटना अथवा साजिश से सरकारें सबक लेने के बजाय एक-एक लाख रुपये पीड़ितों को देने की घोषणा करके अपने कर्तव्यों की इतिश्री समझ लेती हैं। अगर यही दुर्घटना किसी मस्जिद अथवा गिरजाघर में हुई होती तो सरकारों में मुआवजा देने की होड़ लग गई होती। हर प्रकार की जाँचपड़ताल के - बाद उन स्थलों की सुरक्षा को सुदृढ़ करने अथवा उनकी सुविधा में कई गुना बढ़ोत्तरी करने में कोई संकोच नहीं करतीं। लेकिन इस देश की तथाकथित अल्पसंख्यक तुष्टीकरण की पोषक सरकारों से हिन्दू धर्मस्थलों की सुरक्षा की अपेक्षा और वहाँ आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा तथा हर प्रकार की घटनादुर्घटना - से त्वरित निपटने की तैयारी से सम्बन्धित अपेक्षा करना आज के दिन एक दिवास्वप्न जैसा ही है। हिन्दू समाज आज भी अगर अपने ही देश में उपेक्षित है, प्रताड़ित अथवा अपमानित हो रहा है तो उसके लिये किसी अन्य को दोषी ठहराने के बजाय अपनी सामाजिक विसंगतियों की ओर ध्यान देना ही होगा। अन्यथा सामाजिक विसंगतियों के कारण आपसी विभाजन के फलस्वरूप एकता की कमी हमेशा हमें सरकारी उपेक्षा एवं प्रताड़ना का शिकार बनाती रहेगी, नयना देवी मन्दिर जैसी दुर्घटनाएँसाजिशें चलती रहेंगी। हम इन दुर्घटनाओं के पीछे के षड्यन्त्रों को / समझें। यह समय की माँग है और यही बुद्धिमत्ता भी।